नई तरकीब से मैं नया वोट दिलाता हूँ

- प्रफुल्ल कोलख्यान

कब गम धर दबोचे! लूट ले मिजाज, इस डर से खुशी नहीं मनाता हूँ
दोस्तों को हो जलन, दुश्मनों को कुढ़न, ऐसी हर खबर को दबाता हूँ

मेरा दुख बिलाइ नहीं बाघ है, अक्सर वह कभी मैं भी उसे सताता हूँ
मेरा मन ही जानता है कि जब वह रूठ जाता है कभी, कैसे मनाता हूँ

घर से जब निकलता हूँ बाहर खुद को ही नहीं दुख को भी हँसाता हूँ
दुख हँसता ठहाके लगाकर बाहर, मैं दुश्मनों को इस तरह डराता हूँ

रखो पंचवर्षीय योजना अब खुद को मैं किसी और जाल में फँसाता हूँ
मैं और मेरा दुख मिलकर देखो किस अदा से नये जाल को हिलाता हूँ

दुख ने कहा सुबह मेरे कान में हँसकर चल तेरे को आधार दिलाता हूँ
बिक गया कोट, तो क्या गम! नई तरकीब से मैं नया वोट दिलाता हूँ